गतांक की चीर-फ़ाड़

असामाजिक तत्वों पर लगाम नहीं!

मज़दूर मोर्चा के 10-16 जून 2018 के अंक में फ़रीदाबाद में असामाजिक तत्वों को पुलिस का कोई खौफ नहीं है और उनके हौंसले इतने बुलंद हो गये हैं कि वे आये दिन स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी आदि जाने वाली लड़कियों का वीडियो बनाकर वायरल कर लड़कियों को बदनाम और ब्लैकमेल करने की हरकतें करते रहते हैं। जिनका 'फ़रीदाबाद में लड़कियों का वीडियो बनाने वाले गिरोह की खुली गुंडागर्दी, पुलिस हवाबाजी में व्यस्त' में विवेचन किया गया है। पुलिस सत्तारूढ़ दल के नेताओं व दबंगों के इशारों पर काम करती है क्योंकि वे मनमाफ़िक पोस्टिंग व ट्रासफ़र के लिये इन्हीं पर निर्भर करते हैं। इसलिये पुलिस वाले आम लोग़ों की सुरक्षा व कानून व्यवस्था बनाए रखने के काम को दरकिनार कर देते हैं।

पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के आरएसएस के एक शिविर में बतौर मुख्य वक्ता भाग लेने पर उठे विवाद के संदर्भ में प्रणव मुखर्जी की बेटी शर्मिष्ठा मुखर्जी की अपील 'आपका संघ मुख्यालय में दिया गया भाषण तो भुला दिया जायेगा लेकिन तस्वीरें हमेशा के लिये रह जाएंगी, इनको फ़र्जी बयानों के साथ फ़ैलाया जायेगा' बिल्कुल सामयिक व सत्य है, जो कि लेख 'जब महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के एक शिविर को संबोधित किया...' में उद्धृत भाषण से प्रमाणित होता है। गांधी द्वारा संघ की प्रशंसा में कहे गये शब्दों को संघ द्वारा बार-बार दोहराया जाता है परन्तु गांधी के कथन ''अगर हिंदू यह समझें कि हिंदुस्तान में हिंदुओं के सिवाय अन्य किसी के लिये कोई जगह नहीं है और यदि गैर-हिंदू, खासकर मुसलमान, यहां रहना चाहते हैं तो उन्हें हिंदुओं का गुलाम बनकर रहना होगा, तो वे हिंदू धर्म का नाश करेंगे। और इसी तरह यदि पाकिस्तान यह माने कि वहां सिर्फ़ मुसलमानों के लिये ही जगह है और गैर मुसलमानों को वहां गुलाम बनकर रहना होगा, तो इससे हिंदुस्तान में इस्लाम का नामोनिशान मिट जायेगा'' की उपेक्षा की जाती है।

2019 के लोकसभा चुनाव में मोदी व भाजपा को सत्ता से हटाने के लिये विपक्षी दल एकजुट होने की कवायद में लगे हुये हैं, परन्तु भाजपा व विपक्षी दलों विशेषकर कांग्रेस दोनों की आर्थिक-औद्योगिक नीतियां लगभग एक जैसी ही हैं। इसलिये जनता में अपनी विश्वसनीयता बनाये रखने के लिये विपक्षी दलों को अपनी वैकल्पिक नीतियों को जनता के सामने रखना होगा, जो 'भाजपा को हटाने के लिये एकजुट हो रहे विपक्षी दलों की वैकल्पिक नीतियां क्या है?' से स्पष्ट है। इसी तरह भाजपा विरोधी गठबंधन, को 'साम्प्रदायिकता की चुनौती का जवाब क्या है? में उठाये गये मुद्दों का हल तलाशना होगा।

प्रधानमंत्री के तरह बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दावे व वायदे तो बहुत करते हैं परन्तु धरातल पर कुछ भी नहीं दिखाई देता। दोनों में विरोधाभास अपनी पराकाष्ठा पर हैं। नीतीश कुमार खुलकर दावा करते हैं कि ''हम करप्शन, क्राईम व कम्यूनिलज़्म से समझौता नहीं करने वाले'' परंतु उनकी वास्तविकता का 'विरोधाभास की पराकाष्ठा है नीतीश' में तथ्यात्मक खुलासा किया गया है।

संघ परिवार द्वारा एक मनगढंत झूठी कहानी का प्रचार किया जाता रहा है कि 1946 में सरदार वल्लभ भाई पटेल और जवाहर लाल नेहरू के बीच प्रधानमंत्री पद के मुकाबले में नेहरू की बजाए पटेल बहुमत की पसंद थे परंतु महात्मा गांधी की पसंद के कारण नेहरू को प्रधानमंत्री बनाया गया। लेख 'सावरकर, गोलवालकर, श्यामाप्रसाद क्यों प्रधानमंत्री नहीं बने...' द्वारा इस झूठ को पूरा बेनकाब किया गया है। इससे स्पष्ट है कि संघ परिवार को संसदीय प्रणाली की व्यवस्थाओं की कोई जानकारी नहीं है।

भारतीय संविधान के अनुसार राज्य सभा में किसी राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिये उस व्यक्ति को संबंधित राज्य का निवासी व मतदाता होना चाहिये। परंतु प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा अक्सर इस व्यवस्था का दुरुपयोग किया जाता है। झूठा शपथ पत्र देकर राज्य की मतदाता सूची में नाम दर्ज करवाकर चोर दरवाजे से राज्यसभा में पहुंच जाते हैं जिनमें पूर्व राष्ट्रपति, पूर्व प्रधानमंत्री, पूर्व उप-प्रधानमंत्री, वर्तमान उप-राष्ट्रपति, कई केन्द्रीय मंत्री व अनेक शंसद शामिल हैं।

'प्रणव मुखर्जी जो राष्ट्रीय स्वयं संघ के कार्यक्रम में भाग लेने की वज़ह से चर्चा में है, असल में चुनाव तंत्र से धोखाधड़ी के जनक हैं' लेख के जरिये विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा उनके राजनीतिक हित साधने के लिये संवैधानिक लोकतांत्रिक व्यवस्था से खिलवाड़ करने की चालों से पाठकों को जागरूक करने का उचित प्रयास किया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा जनहित में कोई भी काम न करने पर 'मेरा एक काम बताओ जिससे जनता का भला हुआ हो-सिर्फ़ एक!!!' तथा पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा आरएसएस के शिविर में जाकर संबोधित करने पर 'थोड़ा पहले यहां आ जाते तो दुबारा राष्ट्रपति बन जाते' कार्टूनों द्वारा मोदी व संघ की नीतियों पर उपयुक्त व्यंग्य किया गया है।

- डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

शनिधाम के संस्थापक महामंडलेश्वर दाती मदन महाराज राजस्थानी पर रेप का आरोप

आश्चर्य जनक रूप से प्रमुख न्यूज़ चैनलों में मदन दाती महाराज की कोई खबर नहीं है ,जबकि रेप ओर बाबा का कॉकटेल तो मीडिया का सबसे पसंदीदा सब्जेक्ट रहता है और दाती महाराज तो नियमित रूप से राष्ट्रीय चैनलों पर लगातार उपस्थित होते रहते हैं इसलिए यह ब्रेकिंग न्यूज़ होनी चाहिए थी।

दाती महाराज फतेहपुर बेरी में शनि धाम के प्रमुख शनिधाम के संस्थापक महामंडलेश्वर है उनके अनेक आश्रम भी है दक्षिण दिल्ली में उनके पास विशाल फार्म हाउस है।

हाल ही में बीजेपी के राष्ट्रीय महासचिव राम लाल मोदी सरकार के 4 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में दाती महाराज से मिले थे। उन्होंने फेसबुक पर लिखा, 'महामंडलेश्वर शनिधाम परमहंस दाती जी महाराज को केंद्र सरकार की विगत चार वर्षों की उपलब्धियों वाली बुकलेट भेंट की। उन्होंने आशीर्वाद स्वरूप कहा मोदी जी ने बेटी बचाओ व स्वच्छता के लिए अद्भुत कार्य किया हैं।'

किन बंदरों को उस्तरा दे दिया, कश्मीर में जवान नहीं सुरक्षित शुजात बुख़ारी को मरवा दिया, ख़ाक युद्ध विराम लागू करेंगे?

बांग्लादेश में लेखक शाहजहान बच्चू की हत्या और कश्मीर में लेखक पत्रकार शुजात बुखारी की हत्या मुस्लिम धर्मांध अलगाववादी गुटों ने की है । इन हत्याओं से यह प्रमाणित होता है कि मुस्लिम धर्मांध,अलगाववादी गुट चुन-चुन कर उन उन लोगों की हत्या कर रहे हैं जो प्रगतिशील, उदारवादी और एकता चाहने वाले लोग हैं। इस प्रकार की हत्याओं की मैं पूरी तरह निंदा और विरोध करता हूं । उनकी जितनी भर्त्सना की जाए वह कम है।

ये हत्यारे समाज और देश के शत्रु हैं। किसी भी धर्म के धर्मांध और अलगाववादी गुट प्रगतिशील, उदारवादी, धर्मनिरपेक्ष, जनवादी विचारों के विरोधी होते हैं क्योंकि उन्हें पता है, प्रगतिशीलता,सहिष्णुता और धर्मनिरपेक्षता उनके एजेंडा (धर्मांधता) में सबसे बड़ी बाधा है। क्योंकि हत्यारे विचारों के माध्यम से उनका सामना नहीं कर सकते इसलिए उनकी हत्या कर देते हैं।

एक और बड़ा सवाल यह है कि क्या बांग्लादेश और कश्मीर की सरकारों को यह पता नहीं था कि उनके देश में आतंकवादी किन बुद्धिजीवियों की हत्या करना चाहते हैं? यदि नहीं पता था तो यह सरकारों की विफलता है। और यदि पता था तो क्या हत्याओं में सरकारों की मौन स्वीकृति समझा जाए? -

असग़र वजाहत

काला कपूत था हेडगेवार

पिछले 7 मई 2018 को भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने आरएसएस के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार को भारत माता का महान सपूत कहकर नवाजा। वैसे प्रणव मुखर्जी का वहां जाने का कांग्रेस की जानिब से विरोध भी हुआ। अत हम कह सकते हैं कि प्रणव मुखर्जी वहां सोच समझकर और तैयारी करके ही गये थे।

वे आरएसएस के नागपुर रेशम बाग स्थित मुख्यालय में स्वयंसेवकों को सम्बोधित करने गये थे। उन्हें पता है कि आरएसएस की भूमिका भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बहुत ही नकारात्मक और आजादी विरोधी भूमिका रही है। आरएसएस ने 1925 में बनने के बाद अंग्रेज विरोधी आंदोलन में शिरकत नही की, जनता की यानि हिंदु मुस्लिम एकता को तोडने के लिए ही वह बनायी गयी थी पिछले 93 साल का उसका यही इतिहास रहा है।

प्रणव मुखर्जी ने सरासर गलत औ झूठ लिखा। हेडगेवार का कांग्रेस से छत्तीस का आंकडा था। वे कांग्रेस के कार्यक्रम और नीतियों से मुतमईन नही थे। अंग्रेजों की हिमायत के लिए आरएसएस बनाई जिसने भारत के मुक्ति संग्राम में कभी भी भाग नही लिया ।याद रहे भारतीयों का मुक्ति संग्राम पूरे भारत के लिए था न कि केवल हिंदूओं के लिए।

हेडगेवार ने भारत के मुसलमानों का सांप बताया और कहा कि सांप को देखते ही मार देना चाहिए। इसी जहरीली मानसिकता की आंधी आज तक भी बह रही है, और निर्दोष मुसलमानों को कोई भी बहाना बनाकर मार दिया जाता है। हिंदुत्ववादियों ने यही जहर जनता के जहन में भर दिया है।

हेडगेवार कट्टर जातिवादी थे, वे जातियों और वर्णों में विश्वास रखते थे, वे छूआछात के समर्थक थे ।उनके चेलों द्वारा आयोजित एक छूआछात विरोधी अभियान मे उन्होंने सामूहिक भोज के अवसर पर भास्कर राव निनवे को दलित होने के कारण सामूहिक भोज से अलग कर दिया और निनवे को अलग खाना खाना पडा था।

हेडगेवार, 1930 में भारत की मुक्ति के संघर्ष के प्रतीक तिरंगे झंडे के प्रति दुश्मनी की मानसिकता कायम किये हुऐ थे, जब भारत के हजारों लोग भारत माता की गुलामियों की बेडियां काटने के लिये तिरंगा लेकर आपने प्राणों की आहुति दे रहे थे तब हेडगेवार ने संघियों को आदेश दिया था कि वे 26 जनवरी को भगवा झंडे को फहराये।

हेडगेवार का संगठन आरएसए भारत की साझी संस्कृति और गंगा जमुनी तहजीब के बिल्कुल विरूद्ध है, यह लोगों को हिंदू मुस्लिम बताकर आज भी उनकी एकता को तोड रहा है और जनता की अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ जंग को कमजोर कर रहा है। और भी कमाल देखिये, करो या मरो और अंग्रेजों भारत छोडो आंदोलन के तहत जब हिंदुस्तानी मारे जा रहे थे, अपने सीनों पर गोलियां खा रहे थे और हजारों लोग जेलों में बंद किये जा चुके थे और यहां तक कि पिता अपने दो दो पुत्रों के साथ जेल में बंद थे और अपनी आजादी के लिए मार और मर रहे थे, तब हेडगेवार का देशद्रोही संगठन अंग्रेजों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहा था और बंगाल और सिंध में मुस्लिम लीग के साथ सत्ता में साझेदारी कर रहा था।।

और भी देखिये जब भारत के लोग हिंदुस्तान को जनवादी धर्मनिरपेक्ष गणतांत्रिक देश बनाने में जुटे थे तब हेडगेवार का देशविरोधी संगठन आरएसएस भारत को एक कट्टर हिंदुत्ववादी फिरकापरस्ती के जहर में सराबोर कर रहा था।

प्रणव मुखर्जी जी आपका यह कुकर्म कम से कम देश हित में तो नही है, आपका यह काम भारत की जनता के साम्राज्यवादविरोधी स्वतंत्रता संग्राम की भावना के खिलाफ है, भारत की सांझी संस्कृति और गंगा जमुनी तहजीब के खिलाफ है, यह उन लोगों को प्रमाण पत्र है जो जनता की एकता तोड रहे थे, जनता के बीच विभाजन और बंटवारे का जहर फैला रहे थे, जो तिरंगे का अपमान कर रहे थे, जो हिंदुस्तानी जनता के स्वतंत्रता संग्राम के विरूद्ध और अंग्रेजी साम्राज्यवाद के साथ खडे थे। जो जनता में छूआछात को बढावा दे रहे थे, जो मुसलमानों को सांप बताकर मारने का आहवान कर रहे थे।

प्रणव मुखर्जी जी आपका कर्म एक काला धब्बा है, जो कभी नही मिटेगा। आपने यह क्या किया, क्यों किया? ,यह तो आप जाने। मगर यह जन हित में तो कतई भी नही है, आपका यह काला काम आपको कभी माफ नही करेग और आपका यह स्याह कदम भारत के इतिहास में अमर रहेगा, जिसे हिंदुस्तानी कभी माफ नही करेंगे। प्रणव जी, वह भारत माता का महान नही, काला कूपूत था।

- मुनेश त्यागी

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्क़त हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5
2. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
4. 5 ई-18 नरेन्द्र बुक सेन्टर - 9810229192
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे
6. राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. सिंगला मेडिकल स्टोर, जवाहर कॉलोनी, डिस्पोजल चौक
10. आरसीएम स्टोर, बाबा बालकनाथ मंदिर वाली गली, जवाहर कालोनी, फ़रीदाबाद